एक दीवार नामों की

वियतनाम युद्ध के सैनिकों के स्मारक की कथा

लेखनः जूडी डॉनली

चित्रः फोटो से सज्जित

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक दीवार नामों की

वियतनाम युद्ध के सैनिकों के स्मारक की कथा

लेखनः जूडी डॉनली

चित्रः फोटो से सज्जित

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

1
दीवार

वॉशिंगटन डी.सी. की एक धूप से सजी दोपहर है। शहर के केन्द्र में बने पार्क में लोगों की भीड़ चल रही है। भीड में छोटे बच्चे भी हैं, जो अपने माता-पिता के हाथ थामे बढ़ रहे हैं, जीन्स और स्वैटशर्ट पहने किशोर हैं, वर्दीधारी सैनिक हैं, बिज़नैस सूट पहने पुरुष भी हैं।

इनमें कुछ लोग उदास थके चेहरे वाले सैनिकों की मूर्ति के पास रुकते हैं। अब वे एक-एक कर या छोटे समूहों में पत्थरों से जड़े रास्ते पर बढ़ते हैं।

दरअसल यहाँ आए हैं। यह चीज़ है पार्क के सतह से नीचे बनी वह लम्बी, काली, चमकदार दीवार।

इस दीवार की सतह पर बादल और आकाश का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उसी दीवार की टेक ले फूलों के गुलदस्ते, ख़त, और फोटोग्राफ धरे हैं। दीवार पर नाम उकेरे हुए हैं, हज़ारों-हज़ार नाम।

दीवार के पास पहुँच लोग शान्त हो जाते हैं। कुछ देर रुक कर सिर झुकाते हैं। एक व्यक्ति हाथ बढ़ा कर एक नाम को छूता है। तब अपने छोटे बेटे को ऊँचा उठाता है ताकि वह भी उसे छू सके। एक किशोरी दीवार के पास एक गुलाब रखती हैं तब मुड़ कर चली जाती हैं

ये लोग वे हैं जो खास तौर से उस काली दीवार को देखने आए हैं। इस दीवार को वियतनाम वेटरैन्स मेमोरियल (वियतनाम युद्ध के पूर्व सैनिकों का स्मारक) कहा जाता हैं। दीवार पर उकेरे गए नाम उन अमरीकियों के है, जो इस युद्ध में मारे गए या अब तक गुमशुदा हैं।

पहला अमरीकी सैनिक वहाँ 1959 में मारा गया था। आख़िरकार जब 1975 में यह युद्ध समाप्त हुआ, तक़रीबन 60,000 अमरीकियों ने अपनी जान वहाँ गंवा दी थी। अमरीका द्वारा लड़ा गया यह सबसे लम्बा युद्ध था।

यह अकेला युद्ध था जिसमें अमरीका हारा था।

अमरीका के इतिहास का यह सबसे घृणित युद्ध रहा। कई लोगों की नज़र में यह ऐसा युद्ध था, जिसे लड़ने की कतई दरकार नही थी।

यह स्मारक 1982 में बनाया गया। और शायद यह कभी बनता भी नहीं। वियतनाम के युद्ध ने अमरीकियों को बेहद परेशान और नाराज़ किया था। कुछ लोगों का मानना था कि इतिहास के इस दुखद और कटु समय की याद दिलाने वाले किसी स्मारक की कतई ज़रूरत नहीं थी।

2
सबसे घृणित युद्ध

वियतनाम युद्ध आख़िर था क्या? अमरीकी इसके बारे में परस्पर विरोधी विचार क्यों रखते थे?

वियतनाम युद्ध की शुरुआत द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1940 के दशक के अंत में हुई थी। वियतनाम के छोटे से देश पर फ्रांसीसी राज करते थे। पर वियनाम की जनता अपना शासन खुद चलाना चाहती थी। सो वे अपनी आज़ादी के लिए लड़ने लगे। हो ची मिन नामक एक वियतनामी इस लड़ाई का नेतृत्व कर रहे थे।

1954 में वियतनामी सैनिक फ्रांस पर विजय पाने का जश्न मनाते हुए।

नौ वर्ष बाद हो ची मिन आज़ादी की लड़ाई में जीते। फ्रांसीसियों को वियतनाम पर अपना दावा त्यागना पड़ा। पर इससे वियतनामियों की समस्या हल नहीं हुई। हो ची मिन और उनके अनुयायी अपने देश में कम्युनिस्ट सरकार चाहते थे, जैसी सोवियत यूनियन और चीन में थी। पर कुछ अन्य वियतनामियों को ऐसी सरकार नहीं चाहिए थी। 1954 में हुई शांति बैठक में एक समझौता हुआ और वियतनाम को दो ऐसे हिस्सों में बांट दिया गया, जिनकी अलग-अलग सरकारें हों। उत्तरी वियतनाम की कम्युनिस्ट सरकार के चेयरमैन हो ची मिन थे।

जबकि दक्षिण वियतनाम की सरकार का नेतृत्व कम्युनिज़म के विरोधी कर रहे थे। उनके मुखिया का नाम था नो दिन यीएम।

यह सोचा गया था कि ये दोनों हिस्से फिर से जुड़ेंगे। यह भी कि चुनाव से यह तय हो जाएगा कि उत्तर या दक्षिण की सरकार शासन करेगी। पर दक्षिण वियतनाम के नेताओं ने चुनाव में भाग लेने से ही इन्कार कर दिया। इसलिए क्योंकि हो ची मिन इतने लोकप्रिय थे कि उन्हें लगा कि कम्युनिस्ट जीत जाएंगे। यीएम और उनके साथी हाथ आई सत्ता छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने अपनी सत्ता का उपयोग अपने विरोधियों को चुप कराने में किया।

पर जल्द ही अड़चनें आ खड़ी हुईं। दक्षिण के लोग अपनी सरकार को सहयोग नहीं देना चाहते थे। उन्हें लगता था कि उनकी सरकार बेईमान और अन्यायी है। उनका विश्वास हो ची मिन और उनकी सरकार में था।

1950 के दशक के अंत तक वे दक्षिण वियतनाम के सैनिकों से लड़ने लगे। ये विद्रोही वियत कांग कहलाते थे। उत्तर वियतनाम ने वियत कांग को हथियार और सैनिक उपलब्ध करवाए। जल्द ही खुल कर जंग लड़ी जाने लगी।

संयुक्त राज्य अमरीका ने यीएम की मदद करने का फ़ैसला किया, बावजूद इस तथ्य के कि उनकी सरकार भ्रष्ट और अलोकप्रिय थी। कम्यूनिज़्म के डर ने अमरीका को यीएम का साथ देने पर मजबूर किया। अमरीकी सरकार किसी भी देश को कम्युनिस्ट बनने से रोकना चाहती थी। फिर चाहे वह अमरीका से दूर-दराज बसा वह छोटा सा ही देश क्यों न हो। और उसकी सरकार कितनी भी बुरी क्यों न हो।

शुरुआत में अमरीकी सरकार ने सिर्फ युद्ध सामग्री और कुछ सौ सैनिक भेजे। इन सैनिकों को "सैन्य सलाहकार" कहा गया। वे लड़ने नहीं आए थे। उन्हें बस दक्षिण वियतनाम की सेना को प्रशिक्षित करने में मदद करनी थी। इस मसले पर घर, यानी अमरीका में, कोई चर्चा नहीं थी। अधिकतर अमरीकावासी यह तक नहीं जानते थे कि वियतनाम आख़िर है कहाँ।

पर दक्षिण वियतनाम को और ज़्यादा मदद की ज़रूरत थी। सो अमरीका ने और अधिक पैसा तथा और अधिक सैनिक भेजे। सालों-साल गुज़रे पर दक्षिण वियतनाम की सेना के हाथों से जीत दूर ही रही। सो अमरीका ने एक कदम और उठाया। 1965 में अमरीकी नेताओं ने तय किया कि अमरीका को दक्षिण वियतनामियों को प्रशिक्षित करने से अधिक करना होगा। उन्हें जंग में हिस्सा लेना होगा।

अमरीकी सैनिक वियतनाम पहुँचे।

शुरुआत में कुछ हज़ार सैनिक भेजे गए। क्या इन अमरीकियों के पहुँचने से युद्ध का दिशा बदली? कतई नहीं! सो अमरीका ने और सैनिक भेजे। 1966 तक वहाँ 200,000 सैनिक पहुँच चुके थे। और 1967 तक तक़रीबन 500,000 अमरीकी सैनिक वहाँ लड़ रहे थे।

अब हरेक अमरीकी वियतनाम युद्ध के बारे में जानता था। देश के सभी अख़बार युद्ध के बारे में खबरें छाप रहे थे। टेलिविज़न इस युद्ध को लाखों अमरीकियों के घर में ले आया था। हर रात लोग अपना टेलिविज़न खोलते और युद्ध के दुःस्वप्न सरीखे दृश्य देखते। बम से नष्ट होने के बाद धुँआते खण्डहर। खून से लथपथ घायल अमरीकी सैनिक। मिट्टी में पसरी लाशें। सप्ताह-दर-सप्ताह, महीने-दर-महीने यही चलता दिखता।

और युद्ध खत्म होने के आसपास भी नहीं था।

3
घर में लड़ाई

दूर-दराज वियतनाम में युद्ध घिसट रहा था। इधर अमरीकी भी पक्ष लेने लगे। जो अमरीकी युद्ध में विश्वास रखते थे उन्हें "हॉक्स" (बाज़) का नाम दिया गया। वे सरकार की इस बात से सहमत थे कि कम्युनिज़्म संयुक्त राज्य अमरीका के लिए ख़तरा था। वियतनाम को किसी भी सूरत में कम्युनिस्ट देश नहीं बनने देना चाहिए। फिर चाहे इसकी जो भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। अमरीकियों को लड़ते जाना चाहिए।

इधर जो अमरीकी यह चाहते थे कि अमरीका को वियतनाम से निकल जाना चाहिए, उन्हें "कपोत" कहा जाता था। कुछ कपोतों को लगता था कि अमरीका का उत्तरी और दक्षिण वियतनाम के बीच हो रहे युद्ध में कूदने का कोई मतलब ही नहीं है। वे चाहते थे कि वियतनाम के लोग अपने मसले खुद सलटाएं। कुछ दूसरे लोगों का मानना था कि दक्षिण वियतनाम में अगर कम्युनिस्ट सरकार आ भी जाती है तो उससे अमरीका को नहीं डरना चाहिए। उन्हें लगता था कि एक खराब और भ्रष्ट सरकार को महज कम्युनिस्ट न होने के कारण समर्थन देना बेमानी है। कुछ लोगों को युद्ध के तौर-तरीकों से ही नफ़रत थी। बमबारी वियतनाम को खण्डहरों में बदल रही थी। रासायनिक हथियार वहाँ की ज़मीन से वनस्पतियों को उजाड़ रहे थे। पर सबसे बुरी बात यह थी कि निर्दोष लोग - बच्चे और शिशु तक हमले में मारे जा रहे थे।

कपोत अमरीकी सरकार को दिखाना चाहते थे कि युद्ध के बारे में उनकी क्या भावनाएं थीं। उन्होंने सड़कों पर उतर जुलूस निकाले। वे गाते, नारे लगाते, हाथों में तख्तियाँ ले निकलते।

इन तख्तियों पर लिखा होता युद्ध को खत्म करो, हत्या करना बन्द करो, वियनाम से निकलो। कभी बाज़ इन विरोध प्रदर्शनों के दौरान अपनी तख्तियाँ ले कर निकलतेः संयुक्त राज्य अमरीका पूरी तरह से, उत्तरी वियतनाम को बम से उड़ा दो, अमरीका से प्यार करो या उसे छोड़ दो। दानों समूह में अक्सर भिडन्त होती।

युद्ध जैसे-जेसे खिंचता गया ये विरोध प्रदर्शन बड़ा, और बड़ा आकार लेने लगे। 1969 में अमरीका भर के बड़े शहरों में युद्ध के विरुद्ध बैठकें हुईं, जुलूस निकाले गए। लोगों ने काम का बहिष्कार किया ताकि सरकार को पता चले कि वे युद्ध की समाप्ति चाहते हैं। कुछ विरोध रात को हुए जिसमें हज़ारों लोग एक साथ निकले। हरेक के हाथ में एक मोमबत्ती थी जो उन अमरीकी सैनिकों के नाम थी जो वियतनाम में मारे गए थे। अमरीकी इतिहास का सबसे बड़ा विरोध जुलूस वॉशिंगटन डी.सी. में निकाला गया जिसमें 800,000 लोग जुड़े थे। वे वियतनाम युद्ध में अमरीका की भागीदारी का विरोध कर रहे थे।

1970 में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान एक त्रासदी घटी। विशेष सैन्य दल, जिसे शान्ति बनाए रखने की ज़िम्मदारी दी गई थी, उसने चार कॉलेज छात्रों की गोली मार कर हत्या कर दी। इस घटना से समूचा देश सकते में आ गया।

40,000 से ज़्यादा अमरीकी सैनिक वियतनाम में मारे जा चुके थे। पर अब अपने ही देश में वियतनाम के लिए अमरीकियों को मारा जा रहा था।

हरेक अमरीकी परिवार जिसका एक भी किशोर बेटा था, वह भयभीत था। क्या उनके बेटे को भी वियतनाम में लड़ने भेजा जाएगा? क्या वह वहाँ से जिन्दा लौटेगा? क्या यह भयंकर युद्ध कभी ख़त्म भी होगा? लग यह रहा था कि अमरीका के नेता यह जानते ही नहीं थे कि इस युद्ध को कैसे रोका जाए।

विरोध प्रदर्शन के दौरान कॉलेज छात्रों की हत्या से अमरीका भयातुर हो उठा था।

4
जीता न जा सकने वाला युद्ध

वियतनाम में लड़ने का अनुभव कैसा था?

वियतनाम में लड़ने वाले अधिकांश सैनिकों का मानना था कि वह एक दुःस्वप्न-सा था।

जब कोई सैनिक वियतनाम पहुँचता, वह बिरले ही उन साथियों के साथ होता जिनके साथ उसने प्रशिक्षण लिया था। उसे किसी ऐसे समूह के पास भेज दिया जाता जो महीनों से साथ-साथ लड़ रहा था। अमूमन वह समूह में किसीको नहीं जानता था।

कई अमरीकी सैनिक किशोर थे जो इसके पहले कभी घर से बाहर अकेले नहीं रहे थे। अब वे अचानक खुद को धान के खेतों, फूस की छतों वाली झोंपड़ियों के अजीब से देश में पाते। खुद को ऐसे लोगों से घिरा पाते जिनकी भाषा वे समझ ही नहीं सकते थे।

दक्षिण वियतनाम अमरीका की किसी भी जगह जैसा नहीं था। वह दलदलों और जंगलों से भरा था। बेहद गर्म और गीला। वहाँ खूब बारिश होती थी। वहाँ काटने वाली चींटियाँ, साँप और इन्सानों व पशुओं का खून पीने वाली जोंक थी। यह सब इतना अलग था कि एक सैनिक ने घर भेजी एक

पाती में लिखा था, ''यह विश्वास करना कठिन है कि ये सितारे वही हैं जो तुम लोगों पर भी चमकते हैं।''

इन तमाम कठिनाइयों के बावजूद अधिकांश अमरीकी सैनिक मानते थे कि वे एक नेक कारण से दक्षिण वियतनाम आए हैं। वे दक्षिण वियतनाम के लोगों की मदद के लिए आए हैं। सो वे उम्मीद करते थे कि स्थानीय किसान और गाँव के बाशिन्दे उनके पक्ष में होंगे। पर ऐसा हमेशा नहीं होता था। कुछ किसान चाहते थे कि वियत काँग जीते। और कुछ तो वियत काँग का हिस्सा ही थे। उनकी नज़र में अमरीकी सैनिक दुश्मन थे।

अधिकांश युद्धों में लड़ने वाले दोनों पक्ष साफ दिखाई देते थे। वियतनाम युद्ध में ऐसा नहीं था। वियत काँग के सैनिक और सामान्य किसान बिलकुल एक जैसे दिखते थे, कपड़े भी एक से पहनते थे। कई बार स्त्रियाँ, वृद्ध पुरुष और बच्चे तक वियत काँग की मदद करते थे। अमरीकी सैनिकों को यह पता ही नहीं होता कि जिन वियतनामियों को वे देख रहे हैं, वे दोस्त हैं या दुश्मन।

यह युद्ध कई दूसरे मायनों में भी अलग था। यहाँ ऐसी बड़ी मुठभेड़ें कम थीं जिसमें एक सेना दूसरे का सामना करे। वियत काँग के सैनिक छोटे समूहों में, जंगलों में या खुफिया सुरंगों में छिपते और तब अचानक हमला कर, फौरन लौट वापस छिप जाते।

अमरीकी सैनिक भी अधिकतर समय छोटे समूहों में ही पलटवार करते। उन्हें छोटी टुकड़ियों में गश्त के लिए भेजा जाता ताकि वे दुशमन के सैनिकों को तलाशें और मार गिराएं। वियत काँग के सैनिक झाड़ियों, सुरंगों या गाँवों में छिपते थे। वे एक-एक कर अमरीकियों को मार गिराते थे। वियत काँग के सैनिक ज़मीन में बम गाड़ते। किसी पगडंडी या पुल पर भी बम छिपा हो सकता था। एक भी गलत कदम उस बम को फोड़ सकता था।

अमरीकी सैनिक अक्सर यह सोचा करते थे कि उनके आने से युद्ध पर कोई असर पड़ भी रहा है या नहीं। वे दिनों-दिन तक लड़ कर किसी एक इलाके को दुश्मन के सैनिकों से मुक्त करने की कोशिश करते।

वे भी झाड़ियों में छिप बन्दूक की गोलियों और बमों से बचते। उनकी आँखें के सामने उनके साथी घायल होते या मारे जाते। आख़िरकार बन्दूकों की आवाज़ें रुकतीं। दुश्मन जा चुके होते। पर क्या अमरीकी सचमें जीत गए होते? कुछ ही सप्ताहों या दिनों बाद दुश्मन सैनिक उसी इलाके में वापस लौट आते।

समय गुज़रने के साथ घर आई खबरें वियतनाम में लड़ना और कठिन बनाने लगीं। सैनिक जान चुके थे कि कई अमरीकी युद्ध के ख़िलाफ़ थे। कुछ सैनिक भी यह स्वीकारने लगे थे कि यह युद्ध बेमानी है। उन्होंने यह भी सुना था कि अमरीकी नेता उत्तरी वियतनाम के साथ समझौता कर शान्ति बहाल करने के लिए बातचीत कर रहे हैं। पर जब तक यह नहीं हो जाता, सैनिकों को वहीं रहना, लड़ना और मरना था।

आख़िरकार, वियतनाम में पहले अमरीकी सैनिकों के मरने के सोलह सालों बाद, युद्ध समाप्त हुआ। यह कैसे हुआ? ज़्यादातर अमरीकियों को लगने लगा था कि युद्ध की कीमत बहुत ही अधिक है - सैनिकों के जीवन और व्यय की जा रही राशि के अर्थ में। सो 1973 में अमरीकी सरकार ने उत्तरी वियतनाम और वियत काँग के साथ शान्ति समझौता किया।

और लगभग सभी अमरीकी सैनिक उस वर्ष घर लौटे। आख़िरी अमरीकी 1975 में घर लौटे - उस वक्त जब उत्तरी वियतनाम ने दक्षिण के शासन की कमान संभाल ली।

साठ हज़ार अमरीकियों ने इस युद्ध में अपनी जानें गंवाईं थीं। 300,000 से अधिक सैनिक घायल हुए थे। जो अमरीका की सरकार नहीं चाहती थी, वह हो कर रहा। दक्षिण वियतनाम में कम्युनिस्ट सरकार बन चुकी थी।

युद्ध तो खत्म हो चुका था पर लोगों के मन में बसी नाराज़गी और कड़वाहट खत्म नहीं हुई थी। अमरीकी जनता की नाराज़गी और शर्म की भावना को जिन्हें झेलना पड़ा, वे थे घर लौटने वाले सैनिक।

वियतनाम युद्ध के पूर्व सैनिक, नायकों/हीरों के रूप मे घर नहीं लौटे थे। उनके स्वागत में कोई बैण्ड-बाजा नहीं बजा था। कोई जुलूस नहीं निकाले गए थे। उनकी पूरी तरह उपेक्षा की गई थी। कई बार तो लोग वर्दीधारी सैनिकों को देख उनका अपमान करते, उन्हें गन्दी गालियाँ बकते।

कई सैनिकों को तो वियतनाम युद्ध के बाद सामान्य ज़िन्दगी में लौटना असंभव लगा। वियतनाम युद्ध के पूर्व सैनिकों को किसी भी अन्य युद्ध के सैनिकों से अधिक समस्याओं को सामना करना पड़ा। बिगड़े हुए स्वास्थ्य की समस्या, नशे की लत लगने की समस्या, काम तलाश पाने की समस्या। उन्हें सरकार से मदद भी बहुत ही कम मिली।

इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि सैनिकों ने युद्ध इसलिए लड़ा, क्योंकि उन्हें लड़ना पड़ा। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्होंने युद्ध के दौरान क्या-क्या नहीं झेला था। उन्हें उस युद्ध के लिए दोषी मान लिया गया, जो उन्होंने छेड़ा ही नहीं था।

5
उन सबके नाम

1979 की एक देर रात वियतनाम में लड़ चुका एक पूर्व सैनिक, जैन स्क्रग्स, अपनी रसोई में रखे टेबल के समने बैठा था।

जैन खुशकिस्मत था। वह वियतनाम में घायल ज़रूर हुआ था, पर बच गया था। घर लौटने पर उसने अपनी ज़िन्दगी फिर से बनाई थी। उसके पास एक नौकरी थी। उसकी पत्नी थी।

पर जैन यह न भूल सका था कि वियतनाम में युद्ध लड़ने का अनुभव कैसा था।

उस रात उसे नींद नहीं आ रही थी। उसके दिमाग में वे भयंकर दृश्य बार-बार कौंध रहे थे। एक दर्जन सैनिक ट्रक से सामान निकाल रहे थे।

अचानक एक धमाका हुआ। हवा में शरीर उछले। सारे सैनिक मर गए या मरने की कगार पर थे। वह असहाय खड़ा देखता रहा था।

यह दुःस्वप्न-सा लगता है, पर था नहीं। यह सचमें हुआ था। वे सैनिक जैन के साथ लड़े थे। वे उसके साथी, उसके दोस्त थे!

जैन उन हज़ारों सैनिकों के बारे में सोचता रहा, जो युद्ध में मारे गए थे। पर उनके देश ने उन्हें सम्मानित करने के लिए कुछ नहीं किया।

उसने मन ही मन एक संकल्प किया।

वह यह सुनिश्चित करेगा कि उन अमरीकियों के सम्मान में एक खास स्मारक बने, जो वियतनाम युद्ध में लड़े थे। उसमें उन सभी स्त्री-पुरुषों का नाम दर्ज होंगे, जो वियतनाम गए, पर लौटे नहीं - हरेक व्यक्ति का।
अधिकतर लोगों ने जैन को पागल समझा। आख़िर वह स्मारकों के बारे में जानता ही क्या है? एक स्मारक बनाने में लाखों की लागत आती है। वह इतनी राशि भला कैसे जुटाएगा?

पर जैन जुटा रहा। उसने बैठकें बुलाईं। भाषण दिए। शुरुआत में किसीने उसकी बात सुनी नहीं। पर तब उसे वियतनाम में लड़े कई पूर्व सैनिक मिले, जिन्हें उसका विचार पसन्द आया। वे जैन के इस ख़याल से सहमत थे कि सामान्य अमरीकी जनता भी इस स्मारक के लिए पैसे देगी। उन्होंने अपने समूह को वियतनाम वैटरन्स् मेमोरियल फंड का नाम दिया।

अख़बारों और टीवी के पत्रकारों ने इस स्मारक निधि पर खबरें छापीं/प्रसारित कीं। लोगों की सहयोग राशि आने लगी।

एक किशोरी ने, जिसने अपने पिता को युद्ध में खोया था, दस डॉलर भेजे। एक बेरोज़गार पूर्व सैनिक ने पाँच। जैन आशा से भरा था। पर दो महीनों में बस 144.50 डॉलर ही इकट्ठा हुए। लाखों डॉलर वह किस तरह जुटाएगा?

दूसरी समस्याएं भी थीं। जैन पूरे देश के लिए एक स्मारक बनाना चाहता था। उसे लगा कि स्मारक को वॉशिंगटन डी.सी. के बीचों-बीच होना चाहिए। पर इसका मतलब यह भी था कि कांग्रेस और राष्ट्रपति से अनुमति लेना। पर वे उसकी बात भला क्यों सुनते?

कभी-कभी जैन को लगता कि काम बहुत ही बड़ा है। पर ज़्यादा देर तक नहीं। कोई न कोई ख़त आ जाता, जो उसे याद दिलाता कि स्मारक लोगों के लिए क्या मायने रखता है। पूर्व सैनिकों की पत्नियाँ और बच्चे लिख कर बताते यह ख़याल कि किसीको उनकी फिक्र है, जानना ही उनकी मदद करता है। वियतनाम में लड़े पूर्व सैनिक लिखते कि वे अमरीका के लिए, अपने देश के लिए लड़ने के बावजूद शर्मिन्दगी झेल कर थक चुके हैं। जिन माता-पिता ने अपने बेटों को खोया था, जैन को पत्र लिख उसका शुक्रिया अदा करते। एक ने तो सहयोग राशि भेजते समय लिखाः "मेरे बेटे की स्मृति में।" उनका नौसैनिक बेटा अपने दोस्त की ज़िन्दगी बचाने के बाद मरा था। उसकी उम्र महज 18 वर्ष की थी।

साल भर की निरंतर कोशिशों के बाद कुछ अद्भुत हुआ। जैन व पूर्व सैनिकों को वॉशिंगटन डी.सी. की सबसे महत्वपूर्ण और खूबसूरत जगह में स्मारक बनाने की अनुमति मिल गई। यह जगह घास के मैदानों से सजी, पेड़ों की कतारों के बीच, और अमरीका के सबसे चहेते दो स्मारकों - लिंकन मेमोरियल तथा वॉशिंगटन मॉन्युमेंट - के बीच थी।

अब वियतनाम के पूर्व सैनिक अपना मकसद हासिल करने की दिशा में बढ़ चले थे। अमरीका भर से लोग स्मारक के लिए धन इकट्ठा करने में मदद करने लगे। लोगों ने पैसा इकट्ठा करने के लिए अपनी पुरानी चीजें बेचीं, संगीत सभाएं कीं, वॉकअथॉन आयोजित किए, दावतें दीं। केक से लेकर पुरस्कृत गाएं तक के रैफल किए।

लोग अमरीका के उस दुखद समय के लिए कुछ करना चाहते थे। उन्हें यह भी लगा कि जो सैनिक वियतनाम में लड़े उन्हें याद किया जाना चाहिए। शायद इस ही तरीके से उस निरर्थक युद्ध से कुछ अच्छा पाया जा सके।

यह स्मारक केवल कुछ पूर्व सैनिकों का सपना नहीं रहा। यह अमरीका के पूर्वा से पश्चिमी तट तक पसरे हज़ारों अमरीकियों का लक्ष्य बन चुका था।

6
प्रतियोगिता

अब जब स्मारक का सपना पूरा होने के क़रीब था, एक सवाल उठा। स्मारक कैसा होना चाहिए?

पूर्व सैनिकों ने तय किया कि वे राष्ट्र भर की एक प्रतियोगिता आयोजित करेंगे। उन्होंने महत्वपूर्ण कलाकारों, भवन निर्माताओं को प्रतियोगिता का निर्णायक बनाया। जो भी 18 से अधिक आयु का था अपनी डिज़ाइन की प्रविष्टि भेज सकता था।

जैन के मूल विचार को भुलाया नहीं गया। सो एक महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि स्मारक ऐसा हो जिसमें हर उस स्त्री या पुरुष का नाम दर्ज हो जो वियतनाम युद्ध में मारे गए, या उसके बाद से गुमशुदा थे।

निर्णायकों को लगभग 1,500 डिज़ाइनें मिलीं। उम्मीद से कहीं ज़्यादा। उन्हें एक कमरे में प्रदर्शित करना कठिन था। सो इन प्रविष्टियों को जहाज़ों के एक बड़े गराज में लटकाया गया।

तब उन्हें देखा गया। आयोजक चाहते थे कि चयन निष्पक्ष हो, सो कोई नाम नहीं दिए गए थे हरेक प्रविष्टि को एक संख्या दी गई। ताकि निर्णायक को पता न चले कि वह किस व्यक्ति की है।

निर्णायकों को चयन करने में कोई समस्या नहीं हुई। सभी निर्णायक सहमत थे कि सबसे श्रेष्ठ डिज़ाइन संख्या नम्बर 1,026 थी। तो जीता कौन? क्या वह कोई मशहूर कलाकार था? या कोई ऐसा जिसने कई स्मारक बनाए हों?

नहीं! प्रतियोगिता जीतने वाली एक कॉलेज छात्रा थी। एक अनजान 21 वर्षीय स्त्री। यह कार्य उसे गृहकार्य के रूप में दिया गया था, जिसमें उसे बी मिला था! उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह प्रतियोगिता जीत सकेगी। उस युवती का नाम था माया यिंग लिन। वह एक चीनी-अमरीकी युवती थी। उसे वियतनाम युद्ध के बारे में खास पता न था। जब अमरीका इस युद्ध से जुड़ा उस वक्त वह शिशु थी। तो फिर उसने जीतने वाली प्रविष्टि बनाई कैसे?

माया ने बताया कि वह वॉशिंगटन डी.सी. में उस जगह गई जहाँ स्मारक बनाया जाना था। वह नवम्बर के एक धूसर दिन मैदान की घास पर खड़ी हुई। उसने सोचा कि किसी प्रेम करने वाले स्वजन को युद्ध में खोना कैसा लगता होगा। तब उसे एक विचार आया। उसे लगा कि वह त्रासदी धरती को चीरने पर ही दर्शाई जा सकती है।

उसने एक काली दीवार की कल्पना की जो धूप से रोशन दुनिया और एक बेहद काली दुनिया के बीच हो, जहाँ ज़िन्दा लोगों का प्रवेश निषिद्ध हो। एक काली दीवार जिस पर नाम उकेरे गए हों।

निर्णायकों को अपने चयन पर फ़क्र था। जैन स्क्रग्स को भी। पर कुछ पूर्व सैनिकों को यह सख्त नापसन्द आया। दीवार काली क्यों थी? वह ज़मीन के अन्दर क्यों थी? उसका मतलब क्या था? उन्हें लगा कि यह वियतनाम के पूर्व सैनिकों का एक और अपमान था। उन्होंने उसे "शर्म का एक काला घाव" कहा। उन्होंने तो यह उम्मीद की थी स्मारक में शूरवीर सैनिक लड़ते दिखाए जाएंगे। जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिकों के सम्मान में बनाए गए थे।

उन्होंने संकल्प किया कि वे इस स्मारक को बनने ही नहीं देंगे। अब लगने लगा कि स्मारक बनेगा ही नहीं।

तब किसी को यह ख़याल आया कि दोनों ही क्यों न बनाए जाएं? माया लिन की दीवार और वियतनाम में लड़ते सैनिकों की एक मूर्ति! इस सुझाव से सभी पूर्व सैनिक संतुष्ट हुए।

स्मारक का निर्माण कार्य 1982 में शुरू हुआ। एक खास पत्थर जो काला ग्रैनाइट कहलाता है, भारत के पहाड़ों से खोद कर निकाला गया। उसे तराशा गया और पॉलिश से चमकाया गया। और तब वियतनाम में मारे गए हरेक सैनिक का नाम उस पर उकेरा गया।

जब जैन स्क्रग्स को स्मारक बनाने का ख़याल आया था उसके तीन सालों बाद दीवार बन कर तैयार हुई।

जैसा जैन ने सपना देखा था, सभी मृत सैनिकों के नाम उस पर दर्ज थे, तक़रीबन 60,000 नाम। ऐसा लगता था कि वह सूची कभी खत्म ही नहीं होगी।

दीवार बनाने में आठ महीनों से भी कम समय लगा।

जो असंभव लग रहा था वह सच में हुआ। जैन ने उसे संभव किया। स्मारक वियतनाम युद्ध के पूर्व सैनिकों को याद रखने में मददगार होगा। क्योंकि अब उनका अपना स्मारक जो है।

7
घर वापसी पर स्वागत!

13 नवम्बर 1982 को पूर्व सैनिकों का दिवस मनाया गया। इस दिन का जैन स्क्रग्स और वियतनाम से लौटे पूर्व सैनिकों को न जाने कब से इन्तज़ार था। आज उनका स्मारक पहली बार दर्शकों के लिए खुलने वाला था।

वियतनाम युद्ध में हिस्सा ले चुके पूर्व सैनिक हज़ारों की संख्या में वॉशिंगटन डी.सी. आए। कुछ तो पहिएदार कुर्सियों में थे। वे सेना के अपने पुराने जैकेट पहन कर आए। उन्होंने अपने तमगे वर्दी पर लगा रखे थे। वे एक जुलूस में निकले जिसमें झांकियाँ और बैण्ड भी थे। आख़िरकार अब जा कर उन्होंने वियतनाम में लड़ने का फ़क्र महसूस किया।
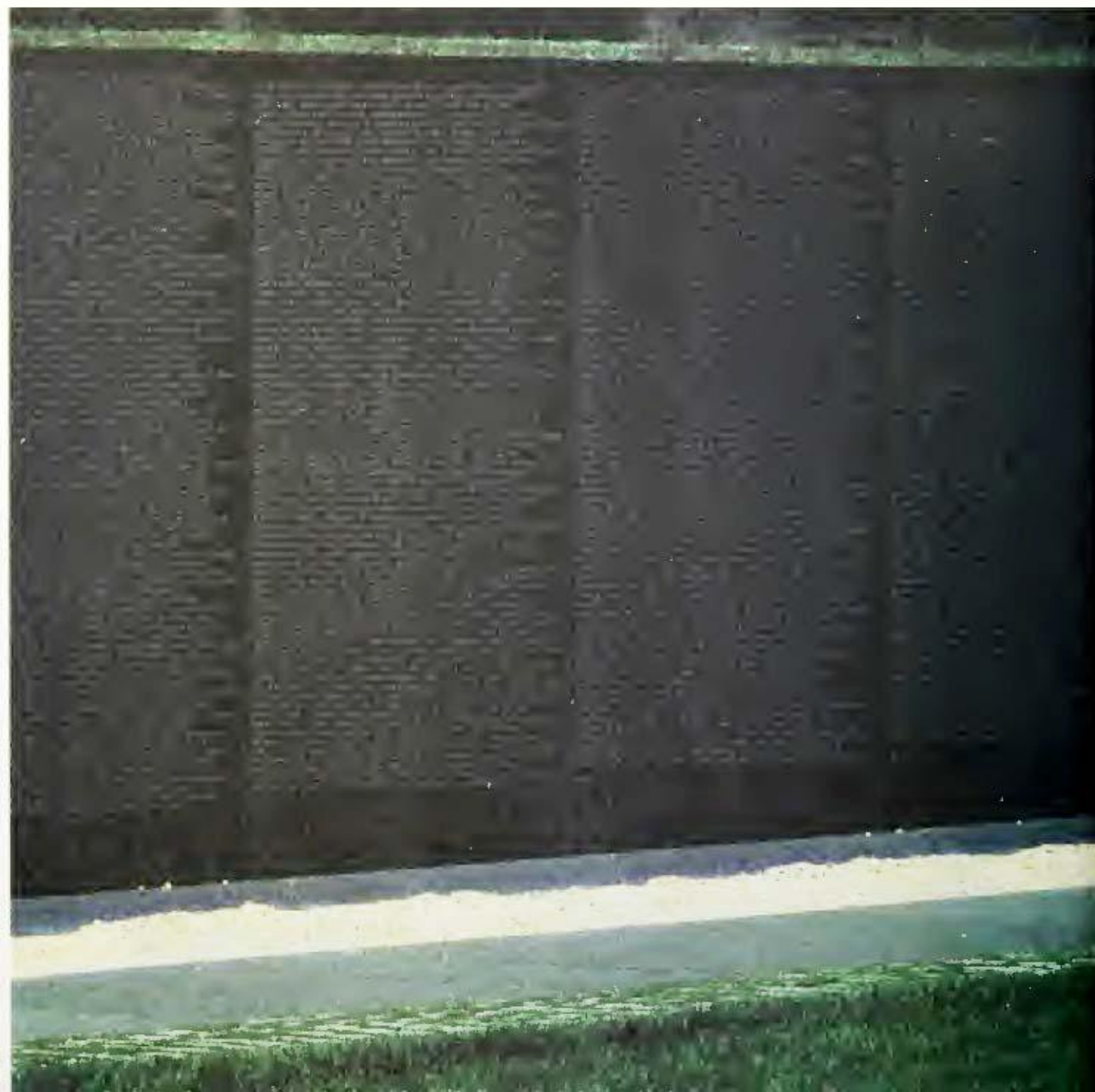
पूर्व सैनिकों ने एक-दूसरे को झप्पियाँ दीं। माता-पिता अपने खो चुके बेटे या बेटी पर रोए। ख़बरनवीस और टीवी के समाचार वाचक उन्हें देखते रहे।

वह दृश्य कभी भुलाया नहीं जा सकता। अमरीका भर के अखबारों में इसकी ख़बर छापी। और उसे टीवी पर दिखाया गया। यही वह घर वापसी थी जिसे पूर्व सैनिक अर्से से चाह रहे थे।

उसके बाद के दिनों और सप्ताहों में आगन्तुकों की आवाजाही रुकी नहीं। और-और लोग दीवार को देखने आते रहे।

परेड स्मारक के पास ख़त्म हुई। 150,000 से भी ज़्यादा लोगों ने भाषण देने वाले वक्ताओं को सुना, जो पूर्व सैनिकों का देश के लिए लड़ने पर शुक्रिया अदा कर रहे थे। तब स्मारक को ढकने वाले परदे हटाए गए।

भीड़ दीवार की ओर बढ़ी। हरेक एक खास नाम तलाश रहा था, जो उसके लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता था। लोगों ने हाथ बढ़ाए, उस नाम के अक्षरों को छुआ। कुछ ने काले पत्थर पर होंठ रख उस नाम को चूमा।

वे दिन और रात, हर समय आए। वे कड़कड़ाती ठण्डक और चिलचिलाती धूप में आए।

साथ ही ऐसा कुछ हुआ जो अमरीका के लम्बे इतिहास में या दुनिया में और कहीं, कभी नहीं हुआ था।

दर्शक दीवार के सामने कुछ पल रुक कर लौट नहीं गए। उन्होंने मृत सैनिकों के नाम कविताएं और ख़त छोड़े। उन ख़तों में लिखा थाः

मैं हर दिन तुम्हें याद करती हूँ।

मुझे अब भी उतनी ही तकलीफ़ होती है।

मैं हमशा तुमसे प्यार करती/करता रहूँगा।

कुछ ख़त कई-कई पन्ने लम्बे थे। उनमें लेखक के निजी विचार, दुखद और सुखद स्मृतियाँ, निराशाएं, और सपने भरे थे। हरेक ख़त अलग और ख़ास था। "तुम दुनिया के सबसे अच्छे पिता बनते," एक बच्ची ने अपने पिता को लिखा था।

"तुम क्यों मारे गए, मैं अब तक क्यों ज़िन्दा हूँ," एक पूर्व सैनिक ने अपने साथी को ख़त में लिखा था। कई बार शब्द नाकाफ़ी लगते हैं। लोग युद्ध झेल रहे स्त्री-पुरुषों के लिए ख़ास अर्थ रखने वाले उपहार छोड़ते। एक माँ ने अपने बेटे के लिए वह टैडी बेयर छोड़ा जो उसे बेहद प्यारा था।

साथ लिखी नोट में उसने कहा, "मुझे लगा कि इसे तुम्हारे पास होना चाहिए।" एक मुस्कुराते हुए बच्चे के चित्र पर लिखा था, "मैं चाहती थी कि तुम भी देख लो कि तुम्हारा बेटा कितना सुन्दर है।"

पार्क के चौकीदारों को हर दिन कुछ नया मिलता। सेना का एक तमगा। एक माउथऑर्गन। मेपल सिरप की एक बोतल।

लोग दीवार के सामने ये उपहार और ख़त क्यों छोड़ते होंगे? इसका कोई अकेला जवाब नहीं हो सकता। कई लोग जिन्होंने ऐसा किया वे खुद भी इसका कारण साफ़ नहीं बता सके। पर सबने यह ज़रूर कहा कि इस दीवार के पास आ उन्हें लगता है कि वे अपने प्रियजन के क़रीब हैं। "मैं सोचती हूँ कि मेरा बेटा सब सुनता है, समझता है," एक माँ ने बताया।

जैन स्क्रैग्स ने दीवार पर बहुत सोचा था। उनका मानना था कि लोगों ने युद्ध के बारे में अपनी भावनाओं को सालों-साल तक दबा कर रखा था। यह दीवार लोगों को अपने आत्मीयजन को अलविदा कहने में मदद करती है।

माया लिन इस बात को दूसरी तरह से पेश करती हैं। उनका मानना है कि दीवार देखने आना अतीत का सफ़र करना है। इसलिए उन्होंने नामों को सैनिकों की मृत्यु की तारीख के अनुसारः दिन-ब-दिन, महीना-दर-महीना, साल-दर-साल व्यवस्थित किया। किसी भी खास स्त्री या पुरुष का नाम तलाशने का मतलब था उस अपूरणीय क्षति का सामना करना। यही दुख से उबरने की शुरुआत भी होती है।

कई लोगों ने कहा कि दीवार ने पूरे देश को उबारने और स्वस्थ बनाने की दिशा में मदद की।

वियतनाम युद्ध ने देश को, अमरीकियों को बाँट दिया था। पर स्मारक ने फिर से सबको साथ जोड़ा। यह दरअसल जीवित और मृत दोनों के लिए है।

स्मारक उन स्त्री-पुरुषों का सम्मान करता है, जो वियतनाम से लौटे नहीं। उनको प्यार करने वाले सभी लोगों की भी मदद करता है। यह युद्ध वियतनाम युद्ध में बचे सैनिकों को फिर से देश का हिस्सा बनने में मदद करता है।

यह स्मारक उन लाखों लोगों की भी मदद करता है जो युद्ध के ख़िलाफ़ थे। जैसा एक महिला ने कहा, ''इतने सारे नामों को देखना दुखद है, जिनके जीवन समाप्त हुए। जिनके परिवारों के दिल टूटे। उम्मीद करती हूँ कि यह दीवार हमें अपने बच्चों को मरने के लिए भेजने से पहले, रुक कर सोचने को मजबूर करेगी। क्या इस दीवार का शेष दुनिया के लिए भी कोई अर्थ है? जी हाँ! कोई भी जो अपने एक पालक, एक बच्चे, एक पति, एक भाई या बहन या एक दोस्त से प्यार करता है, वह इस भावना को समझ सकता है। यह दीवार दर्द, दुख, क्षति की बात कहती है - जो युद्ध की कीमत है।

यह दीवार सिर्फ़ जंग के बारे में नहीं है। यह प्रेम के बारे में है, जो मृत्यु के बाद भी बना रहता है। यही प्रेम हमारी शान्ति की उम्मीद है।

एक दीवार नामों की

वियतनाम में लड़े सैनिको का स्मारक

"तुम क्यों मरे? मैं क्यों नहीं?"

यह अपने मृत साथी को लिखी वियतनाम के एक पूर्व सैनिक की नोट है, जो उसने अपने पुराने साथी सैनिक को लिखी थी। यह उन हज़ारों टिप्पणियों में एक है, जो हर साल वियतनाम के पूर्व सैनिकों के स्मारक के सामने छोड़ी जाती है। यह स्मारक एक दीवार की शक्ल में है, जिसमें उन अमरीकी सैनिकों के नाम दर्ज हैं, जो वियतनाम युद्ध में मारे गए थे। यह दीवार उन स्त्री पुरुषों को सम्मानित करने के लिए, और उन गहरे ज़ख्मों को भरने के लिए बनाई गई थी जो अमरीकियों द्वारा लड़ी गई सबसे लम्बी और सबसे घृणित लड़ाई थी।

यह स्मारक कैसे बना, की कथा नाटकीय है। कथा यह भी बयान करती है कि साठ के दशक के इस युद्ध का अमरीका के लिए क्या अर्थ था।